राज
कॉमिक्स
मूल्य 8.00 रु
440
तीन चुड़ैलें
भोकाल
इस कॉमिक्स के साथ भोकाल का
एक आकर्षक स्टीकर मुफ्त

तीन चुड़ैलें
लेखक: संजय गुप्ता
सम्पादक: मनीष गुप्ता
चित्रांकन: जसवंत सिंह नार
विकासनगर पर उस शाम का सूरज कुछ मनहूसियत की सी रोशनी बिखेरता नजर आ रहा था
उफ! न जाने क्या कारण है आज सांझ कुछ और तरह की लग रही है।
हां भाई, मेरे मन में भी एक अन्जानी सी दहशत जन्म ले रही है।
यह दहशत हर विकासनगर वासी के दिल में घर कर गई थी।
तभी अचानक उनके पांव तले की धरती भयंकर तड़तड़ाहट के साथ चटकती चली गई–
तड़ तड़ा
तड़
और इससे पहले कि वे इस अन्जाने खतरे से बचाव के लिये कुछ करते
धरती को फाड़कर निकल पड़ा भयंकर ज्वाला का तूफान –
फर्र र र
आह!
आह
छः ओं आ गए उस आग की लपेट में–
© RAJA POCKET BOOKS
इतनी भयंकर ऊष्मा थी कि कुछ ही पलों में आग शरीर को जलाती हुई अस्थि-पंजर तक पहुंच गई।
बुरी मौत मारे गए छः ओं नगरवासी।

पूरे विकासनगर में वैसे सैकड़ों आग के चश्में फूट निकले —

हजारों नगरवासी, मवेशी, घर व फसलें आग की भेंट चढ़ गए !

उस वक्त राजा विकासमोहन व सम्मोहन सम्राट शूतान के बीच चल रहा था शतरंज का खेल—

विजय महाराज की होगी !

नहीं ! शूतान ही जीतेगा !

अचानक...

... तड़तड़ाहट की तीव्र ध्वनि के साथ लुढ़क गए शतरंज के सभी मोहरें —

तड़ तड़ तड़ा तड़

और उसी के साथ—

शतरंज की बिसात को चीरती हुई बाहर फूटी अग्नि ज्वालाएं—

आह

आग

महाराज, शूतान व वेणु तीनों आग की लपेट में आ गए

महाराज के बाजू में लगी आग बुझाने के लिए भोकाल फुर्ती से कूदा-

इस कोशिश में उसकी हथेलियां भी जलने लगी।

शूतान की आंखों की रोशनी चली गई-

क्या हुआ शूतान ?

तुरीन मुझे कुछ दिखाई नहीं दे रहा मैं... मैं अन्धा हो गया तुरीन !

क्षण भर में पूरे राजमहल में मातम सा छा गया-

महाराज का हाथ व सम्मोहन सम्राट की आंखें छीन ली नरक की आग ने !...

...और वेणु तो अभी तक होश में नहीं आ सकी !

वेणु बुरी तरह से घायल होकर बेहोश हो गई।

और इधर कुछ और भारी रहस्यमयी घट रहा था –

तीन चुड़ैलें मैंने पाली। हरी, पीली और काली !

तभी जैसे गुफा में एक तूफान सा फड़फड़ाया-

फड़ फड़ फड़

एक मनहूस, एक बदसूरत व एक आक्रमक।

एक उल्लू, एक चमगादड़ व एक बाज !

तीन चुड़ैलें मैंने पाली। हरी, पीली और काली।

गुफा में गूंजते उस रहस्यमयी स्त्री स्वर ने मंत्र फूंका।

मूर्तियों में समा गई तीनों जीवों की शक्तियां।

मूर्तियों में जैसे आत्मा फूंक दी गई हो।

महा चुड़ैल तन्त्रा को तीन चुड़ैलों का प्रणाम।

तीनों चुड़ैलें सजीव हो गईं।

कौन है यह, चुड़ैल तन्त्रा और इसने क्यों पाली हैं ये तीन चुड़ैलें!

सुरीले स्वर से तो लगता है कोई देवी हो, किन्तु उसका मन्तव्य उसके महा चुड़ैल ही होने की तसदीक कर रहा है!

मैंने विकासनगर में जो अग्नियां प्रज्वलित की हैं। तुम्हारा काम है उन बलिवेदियों में इन्सानी बलि देना। जाओ विकासनगर और जिन्दा लोगों को पकड़कर उन ज्वालाओं के हवाले कर दो!

इस काम में तुम्हारी रुकावट बनेंगे भोकाल व तुरीन। किन्तु मैंने जो तुम्हें शक्तियां दी हैं उन्हें वे हरगिज नहीं काट पायेंगे, क्योंकि तुम्हारी जिन्दगियां तो इन तीनों के शरीरों में कैद हैं!

हा-हा-हा-हा!

विकासनगर में चीखों-पुकार मची हुई है।

नहीं! मुझे मत ले जाओ मैं मरने से डरता हूं।

डरने वाला भी जाएगा और जो नहीं डरता वह भी जाएगा।

महाबली भोकाल के रहते किसने विकास-नगर में इतना कोहराम मचाया हुआ है।

चुड़ैल बाजला! चुड़ैल बाजला ने आग के चश्मे की तरफ उछाल फेंका युवक को-

नहीं! मुझे बचा लो, मैं मरने से डरता हूं!

मौत के आतंक की चीखें उसके हलक को फाड़ती हुई सी बाहर निकल रही थी

अपने-अपने घरों में से छुपकर मौत के इस दृश्य को देखती सैकड़ों आंखें तब चौंकी जब-

जो डरता है और जो नहीं डरता। भोकाल की नजरों के सामने यूं आसानी से नहीं मरता।

महाबली भोकाल बचाकर ले गया चुड़ैल बाजला के शिकार को।

युवक को धरती पर खड़ा करके अभी वह पलटा ही था कि —

बाजला को पहले ही पता था कि उसकी राह रोकने तू आयेगा किन्तु...

आह!

... आज के बाद तू किसी की भी राह रोकने लायक नहीं रहेगा।

दर्द से कराह उठा वह।

बाजला ने एक भयंकर सा दिखता तीर और निकाला अपने तरकश से।

मेरी दृष्टि इतनी तेज है कि मेरा निशाना चूकने का मतलब ही नहीं उठता।

अगर इसके सभी निशाने इसी तरह भोकाल का शरीर भेदते रहेंगे तो भोकाल की पराजय निश्चित होगी।

किन्तु बाज़ला के अचूक निशाने को काट दिया भोकाल ने अपनी तलवार से।
तेरा निशाना नहीं चूकता बाजला, तो चूकती भोकाल की तलवार भी नहीं है!
भौचक्की सी देखती रह गई बाजला!
जलती हुई चौखट उठाई भोकाल ने और-
उछाल दी चुड़ैल बाजला पर -
ले चुड़ैल बाजला मेरा निशाना देख!
अग्निमयी चौखट घूमती हुई बढ़ी बाजला की तरफ -
और बाजला की हृदय विदारक चीख गूंज उठी तब जबकि वह चौखट उसकी गरदन में जा फंसी -
आह! जला मारा मरे ने! यह भी कोई तरीका हुआ युद्ध का दुष्ट! चुड़ैल को मारता है!
अगले ही क्षण उसने चौखट निकाल फेंकी, किंतु उसका चेहरा बुरी तरह झुलस गया!
दोनों हाथों में दो तीर संभालकर वह उड़ी -
देख अब तुझे मजा चखाती हूँ तेरी दुष्टता का!
एकाएक उसके तेवर अति भयंकर दिखाई पड़ने लगे थे!
भोकाल जब तक उसकी मंशा समझ पाता, उसने वे दोनों तीर उसके शरीर में घोंप दिये और साथ ही उसके मस्तक को अपने चोंच से भेद दिया।
खच्च
आह
दर्द की लहर दौड़ गई उसके पूरे शरीर में!

उस पीड़ा से तड़पते भोकाल ने उछाल फेंका चुड़ैल को-
वह अपने केशों को नरक की आग में जलने से ना बचा सकी।
हाय! दुष्ट मार ही डालेगा क्या?
संभलने के लाख प्रयासों के पश्चात् भी-
चेहरा जलने से वीभत्स हो गया था और बाल जलने से गंजी भी हो गयी वह!
भोकाल को फिर से अपनी तरफ बढ़ता देख बाजला की हिम्मत जवाब दे गई—
भोकाल भी उसकी तरफ लपका-
भागूं वरना यह किसी को मुंह दिखाने लायक भी नहीं छोड़ेगा, दुष्ट चुड़ैल को भी नहीं बख्शता!
हत्यारिन! ऐसे कैसे भाग जाएगी, अभी तो बहुत से सवालों का जवाब चाहिये तुझसे!
नहीं ईईई भाग! भाग! भाग बाजला भाग भोकाल आया!
लेकिन भोकाल से बचकर भागना कैसे संभव होगा उसके लिये!
भागने को तैयार हो गई थी चुड़ैल!
भोकाल भी कहां पीछे रहता—
तभी बादल के उस विशाल टुकड़े में समा गई बाजला!
अब मैं इसके फरिश्तों के भी हाथ ना आऊंगी!
तेरा पीछा नहीं छोड़ूंगा बाजला चाहे घुस जा तू पाताल में!
देखते ही देखते वह पूरी की पूरी उस बादल में विलीन हो गई!
अब बाजला अपनी खैर मनाए!

लेकिन वह खाली हाथ ही बाहर निकला-

ना जाने कहां गायब हो गई दुष्टा!

फिर उसने नगर का रुख किया।

कहीं और भी टकरा रहा था तूफान चुड़ैल उलूक के रूप में –

छुपने से कोई लाभ नहीं हम आई ही हैं तुम सब-की बलि चढ़ाने और बलि चढ़ाकर ही जाएंगी।

उस घर के छः-ओं प्राणियों की जानें हलक में आ अटकी थी।

उलूक ने दीवार पे टंगा एक खंजर उतारा और उन छः-ओं को बांधने के लिए आगे बढ़ी– .

मैं मानती हूं तुम्हारा डरना सही है, क्योंकि बलि के लिए तो बकरा भी तैयार नहीं होता ही-ही-ही!

चुड़ैल अपनी चुड़ैलियत पर खिलखिला रही थी।

तभी उस युवक के कारनामे ने उसकी हंसी जाम कर दी –

य.. यह क्या किया! एक चुड़ैल के साथ खंजर, खंजर खेला तू यानी पंगा ले लिया तूने। यानी खेल खेलना है तुझे क्या?

जाने क्या बक-बक कर रही थी चुड़ैल उलूक!

अचानक उसके हाथों में नजर आने लगा मस्तचक्रा!

ले देख, मेरे पास है मस्तचक्रा और तेरे पास है खंजर, चल खेल अब खंजर, खंजर! देखें कौन मस्ता है पहले। लेकिन हां, यह तो बता दूं कि मेरी जान मेरे...

...अन्दर नहीं है कहीं और है और तू यदि मेरी गरदन भी काट देगा तो भी मैं मरूंगी नहीं। चल अब तू मेरी गरदन काट, मैं तेरी। देखें कौन बचेगा!

चुड़ैल उलूक की बातों ने उस युवक के रहे सहे होश भी उड़ा दिये।

उसके कांपते हुए हाथों से खंजर छूट गया-

अंह...ही-ही-ही! लो भई पाले का मकोड़ा। खेल बीच में छोड़ा!

अब क्या रह गया था!

छः ओं को बांधकर वह बाहर सड़क पर ले आई।

नहीं ई ई बचाओ! कोई है? अरे! बचाओ हमें!

उनकी चीखों से सारा वातावरण थर्रा उठा था!

चुड़ैल की चुड़ैली आवाज ने और थर्रा दिया उन्हें!

हा-हा-हा

ही-ही-ही! पगलो! उलूक के हाथों से कोई नहीं बचा पाएगा! तुम्हें अब नरक की आग में भुनने से!

यह नगर तुरीन का नगर है!

मेरे रहते तू अपने इरादों में कामयाब नहीं हो सकेगी चुड़ैल उलूक!

उलूक भूल गई है कि यह नगर भोकाल का नगर है। यह नगर शूलान का नगर है

अब चुड़ैल बलि नहीं दे पाएगी!

उसी क्षण उलूक के हाथों में चमक उठा मस्तचक्रा और उसने अपने पास खड़े पेड़ पर एक जबरदस्त वार किया!

तू मेरे करीब पहुंच सकेगी तुरीन! तभी तो कुछ करेगी ना!

मस्तचक्रा ने पेड़ काट दिया!

चरचराता हुआ पेड़ आ गिरा तुरीन व कपाला की राह में। फलस्वरूप –

कपाला की अप्रत्याशित रूप से सामने आ गिरे पेड़ से एक जबरदस्त टक्कर हो गई।

और उलूक ने फुर्ती से उन छः मासूमों को उछाल फेंका नरक की आग में –
लो भई ! तुम तो नरक की सैर को जाओ। इस पगली के पीछे क्यों देर करो।
चुड़ैल ने जो कहा वह कर दिखाया।
भक्क से जल उठे छः शरीर आग के स्पर्श में आते ही –
भक्क
आईईई ऽऽ
देखते ही देखते उलूक ने बलि दे डाली।
तुरीन की आंखों में लहू तैर गया –
दुष्ट कातिल! इसका मूल्य तू अपनी जान देकर भी नहीं चुका सकती
जान तो मेरी तू ले ही नहीं सकती
उलूक ने एक और पेड़ काट डाला –
चर्र र्ऽऽ
मेरा यहां अब काम खत्म ! चल झगड़ा खत्म कर! मुझे जाने दे!
पेड़ फिर से तुरीन की तरफ गिरने लगा उसे फिर से उलझाने के लिए –
किन्तु इस बार वह तैयार थी और तैयार थी कपाला भी –
अब किसी कीमत पर तू यहां से ना जा सकेगी चुड़ैल!
उलूक का यह वार इस बार असफल हुआ !
तुरीन ने अब उलूक पर किया किरणों का प्रलयंकारी वार –
तेरी जान नहीं ले सकती तो क्या ? तेरे पंख तो जला सकती हूं। तेरे हाथ– पैर तो जला सकती हूं।
चुड़ैल को लगा जबरदस्त झटका !!

अपने पंख फैलाकर भागी अब उलूक-

अरे ! भागम भाग खेल ले री उलूक, यह तो मौत से भी बदतर कर देगी तुझे !

तुरीन के देखते ही देखते वह पेड़ की कोटर में समाती चली गई।

इस पेड़ में घुसकर भी नहीं बचेगी तू डायन!

तुरीन के हाथों से निकली जा रही थी वह –

प्रहारा के एक जबरदस्त प्रहार ने पेड़ को जला कर राख कर दिया –

इस आग से बचने के लिए अब तुझे बाहर निकलना ही पड़ेगा।

पेड़ जलता रहा और ...!

जलकर कोयला बन गया –

किन्तु उलूक क्या पेड़ की कोटर से निकल कर एक चमगादड़ भी बाहर न आया !

तुरीन की एक ही ठोकर से भर भराकर गिर पड़ा पेड़ !

उसे उलूक के अस्तित्व का कोई चिन्ह नजर न आया।

नहीं है वह इसमें ! ना जाने कहां गायब हो गई ?

किंतु इस मलबे में...

भारी मन से उसने वापस पैर बढ़ाए !

चुड़ैल चमजोई ने उठा रखा था मौत का असली तूफान-

यह है आज की एक सौ एकवीं व एक सौ दो वीं बलि।

क्या इन मासूमों को बचाने कोई नहीं आएगा ?

और तभी भयंकर हुल्ले के साथ नगर सैनिकों ने चमजोई पर धावा बोल दिया।

हुल्ला हो! ठहर जा शैतान चुड़ैल। नगर सेना आ चुकी है तुझे पकड़ने के लिए।

चमजोई ने अपने आगे बढ़ते हाथ वापस खींच लिए।

ठहरो! पहले जरा इन तिलचट्टों से निबट लूं।

तभी उसके हाथ में नजर आने लगी तलभाल जिसे घुमाती हुई वह सैनिकों की तरफ बढ़ी –

तुम्हारे पचास तलवार और भाले मेरी एक तलभाल का मुकाबला ना कर पाएंगे।

पहला सैनिक तलभाल के भाले की नोंक से वीरगति को प्राप्त हुआ-

आह

दूसरे को काट गई तलभाल की तलवार की धार—

खच्च

आऽऽऽ

और तीसरा भी मौत से हाथ मिला बैठा –

हाय!

बिजली सी चमक उठी मौत बनी चमज़ोई –
कितना अच्छा होता कि काश, तुम सब बलि देने के काम आ जाते, किंतु अभी तो व्यर्थ मारे जा रहे हो !
क्योंकि घायलों व मृतकों की तो बलि भी स्वीकार नहीं होती !
लालभाल ने घायलों व लाशों के ढेर लगा दिये –
किन्तु तुमसे और लोग तो सबक लेंगे ही अब कोई हम चुड़ैलों के कार्य में विघ्न नहीं डालने आयेगा !
मौत की इस देवी का प्रबल भय व्याप्त हुआ बचे हुए सैनिकों पर !
बहुत दुर्दान्त हत्यारिन साबित हुई चमज़ोई एक के बाद एक की बलि चढ़ा दी उसने –
लो बचाने आए थे ना, अब बचकर दिखाओ !
और उन्हें चमज़ोई ने नहीं बख्शा !

दोनों बच्चों को उठाकर वह फिर बढ़ चली बलि-वेदी की तरफ-
अब आज की एक सौ इक्कीसवीं बलि व एक सौ बाईसवीं बलि दूंगी मैं!
दोनों की चीखों ने आसमान सिर पर उठा रखा था!
तभी एक बलिष्ठ हाथ ने नापी चमजोई की गरदन—
चमजोई को पीछे मुड़ने का भी मौका ना मिला।
अपने आपको आसमान में पाया उसने—
कौन है? सामने आकर मुकाबला कर चमजोई का!
महाबली भोकाल को ललकार बैठी थी वह!
मुझे प्यार से भोकाल कहते हैं। इन दोनों बच्चों को बचाने आया हूं।
शैतानी कर गई चुड़ैल—
ओह तो मुझे क्यों पकड़े हुए है। ले जा बचा इन बच्चों को।
नहींऽऽ
दोनों बच्चों को मौत के मुंह में जाता देख हक्का-बक्का रह गया भोकाल!
लेकिन भगवान को कुछ और ही मंजूर था।
चल कपाला!
सही वक्त पर पहुंची तुरीन ने सुरक्षित लपक लिया दोनों बच्चों को।

अब जाकर भोकाल की जान में जान आई !

अब बता चुड़ैल ! यह क्या चक्कर चला रखा है तुम चुड़ैलों ने विकास नगर में !

तू मेरी तलभाल से अभी वाकिफ नहीं हुआ रे पाजी !

धरती की तरफ लौट पड़ा भोकाल चमजोई के साथ !

भोकाल को तलभाल का मजा चखवाना, चाह रही थी वह !

किन्तु भोकाल ने उसे वह मौका ही नहीं दिया –

जुबान लड़ाती है, क्योंकि अभी तू मेरे बाहुबल से वाकिफ नहीं है !

उसके एक ही वार ने चमजोई के चेहरे का मांस फाड़ दिया –

किन्तु बहुत ही ढीठ साबित हुई वह !

चुड़ैलें ऐसी मार की अभ्यस्त होती हैं पाजी ! और खौफ खाना नहीं खौफ खिलाना हमारा काम होता है !

भोकाल ने उसकी गर्दन पकड़कर उसे उठाया-
अभी तेरे होश ठिकाने आ जास्येंगे!
धाड़
आईईईईई

की प्रचण्डता ने उसे धरती
मीलों ऊपर उछाल फेंका !
और फिर जब वह नीचे गिरी तुरीन की आंखे आश्चर्य से चौड़ी हो गईं !
उफ! क्या यह जिन्दा बच पाई होगी!
मेरे सवालों के जवाब दिए बगैर यह मर नहीं सकती!
चमजोई धरती से बाहर निकली –
तुम वाकई वीर हो भोकाल! लेकिन हम चुड़ैलों से टकराकर सिवाय मौत के तुम्हें कुछ नहीं मिलेगा!
फिर अचानक उसके भाड़ से खुल गये मुंह से निकल पड़े सैकड़ों चमगादड़ !
फुर्रर्र फुर्रर्र
उफ!
यह क्यों?
चमगादड़ टूट पड़े भोकाल व तुरीन पर!
मौका मिलते ही चमजोई उड़ चली कुएं की तरफ !
अभी तो चल यहां से महा-चुड़ैल से इस विषय में विमर्श करना होगा !
कुएं में घुसती चली गई वह!
बाद में लाख ढूंढ़ने के बाद भी वह भोकाल को ना मिली !
वह भी औरों की तरह गायब हो गई !
दोनों पूरी घटना पर विचार करते हुए महल की तरफ बढ़ने से ज्यादा क्या करते !

तीनों चुड़ैलें महाचुड़ैल के सामने खड़ी अपनी समस्याएं सुना रही थीं।

महाचुड़ैल! उस दुष्ट भोकाल ने मुझे एक भी बलि ना चढ़ाने दी। बल्कि यह हाल कर दिया मेरा। यदि मैं भागती नहीं तो शायद मेरा कंकाल ही यहां पहुंचता!

उलूक भी अपनी करुण कथा सुनाने लगी –

मुझे भी उस नासपीटी तुरीन ने भागने पर विवश कर दिया। मेरे सुन्दर पंख भी जला दिये उसने।

चमजोई भी कहां चुप रही –

मैं तो एक सौ बीस बलियां दे भी चुकी थी कि दोनों पाजी वहां पहुंच गए और मेरी यह हालत बना दी!

सबकी दास्तान सुनने के बाद बोली महाचुड़ैल तन्त्रा!

मैं तुम्हारे शरीरों को वह सुरक्षा कवच प्रदान करती हूं, जो तुम्हें इस तरह की विपदाओं से बचाएगा!

उन तीनों की तरफ बढ़ी सुरक्षा कवच किरणें।

चुड़ैलों के शरीरों में समा गईं वे किरणें।

तभी महाचुड़ैल ने उनकी तरफ बढ़ाया एक सुन्दर सा आईना –

यह लो इस आइने में जिसकी भी नजर पड़ जाएगी वह सम्मोहित होकर मेरा गुलाम बन जाएगा। किन्तु इसका प्रयोग तभी करना जब कोई रास्ता न बचे....

... फिर वह सम्मोहित गुलाम इतनी मार-काट मचायेगा कि उसे रोकना तक असम्भव हो जायेगा। और फिर हमारा बलि वाला कार्य खटाई में पड़ जायेगा, क्योंकि मृत व घायलों की बलि स्वीकार्य नहीं होती।

अब हम हर बात का ख्याल रखेंगी! महाचुड़ैल। कहीं कोई कमी नहीं छोड़ेंगी और आपको सफलता की सूचना के साथ ही मिलेंगी।

फिर वह तीनों विकासनगर के लिये कूच कर गईं।

सम्मोहन सम्राट की आंखों के लिए चिंतित वे तीनों राजवैद्य के पीछे पड़े हुए थे।

राजवैद्य। हमें शूतान और वेणु पूर्णतया स्वस्थ चाहिये।

इस कार्य के लिए तुरीन की जिंदगी तक ले सकते हैं आप।

इसकी आंखों की जगह बेशक मेरी आंखें लगा दो।

मैं आप सबकी भावनाएं समझ सकता हूं। आप बेफिक्र रहिए। शूतान की आंखें जल्दी ही ठीक हो जायेंगी और वेणु भी।

राजवैद्य से आश्वस्त होकर वे चल पड़े।

भोकाल। नगर में यह नरक की आग यूं ही उठती रही तो हमें यह जगह छोड़ कहीं और नगर बसाना पड़ेगा।

महाराज। ऐसा लगता है जैसे कोई दुरात्मा इस नरक की आग के जरिये बहुत सी बलियां देना चाहती है। उसका पता लगाने के लिए हम अभी तिलिस्मा की ओर प्रस्थान कर रहे हैं।

नगर की गलियों में दौड़ लगाता जा रहा था महाबली का रथ —

तुरीन! क्या तुम भी वातावरण में फैली इंसानी मांस जलने की दुर्गन्ध महसूस कर रही हो!

हां भोकाल! बहुत तीव्र दुर्गन्ध उठ रही है जैसे सैकड़ों इंसान जला दिए गए हों!

अचानक एक विचार आते ही चौंक उठा भोकाल—

तुरीन! क्या तुम भी वही महसूस कर रही हो जो मैं महसूस कर रहा हूं!

हां भोकाल! नगर की हर गली हर मकान सुनसान दिखाई पड़ रहा है!

रथ रोक दिया उसने —

तो इसका क्या मतलब हुआ? क्या नगरवासी नगर छोड़ गए या... या कुछ भयंकर घट चुका है यहां?

खाली पड़े मकान में गूंज उठी उसकी आवाज —

अरे! कोई है यहां? जवाब दो कोई है?

कोई जवाब ना मिला!

एक-एक करके उस गली के सभी मकान छान मारे दोनों ने —

कोई तो जवाब दो, क्या कोई भी नहीं बचा पूरे नगर में?

गहरी खामोशी के बाद —

गूंजा एक मरियल स्वर —

हां यह लंगड़ा बचा है!

रेगिस्तान में अचानक जैसे पानी नजर आ गया हो दोनों को —

दोनों भागते हुए वहां पहुंचे –

ना औरतों को बख्शा ना बच्चों को, और ना बूढ़ों को। सबको उठा-उठाकर नरक की आग में झोंक दिया तीनों चुड़ैलों ने!

मुझे इसलिए छोड़ दिया क्योंकि मैं लंगड़ा था। मेरी बलि स्वीकार नहीं होती। महाबली भोकाल इन बूढ़ी आंखों ने वो भयानक मंजर देखा है कि बयान नहीं कर सकता।

करुण हो गया था बूढ़े का स्वर –

और फिर आंखों में तैरते उस हत्याकाण्ड के दृश्यों के साथ ही उसके मुंह से क्रोध फूट पड़ा –

महाबली! अब आए हो तुम, जब सब कुछ लुट गया! अब तुम क्या कर लोगे उन हजारों जानों के बदले कुल तीन चुड़ैलों को ही तो मारोगे!

बूढ़े के शब्द जुबान से नहीं, उसके दिल से निकल रहे थे

अरे! पहले कहां थे जब यहां चीखों-पुकार मची हुई थी। जब बच्चों व जलते हुए लोगों की चीखों से आसमान गूंज रहा था!

सन्नाटे में खड़ा चुपचाप सुनता रहा भोकाल –

चेहरा लाल भभूका हो उठा उसका –

ऐसा लग रहा था कि लहू उसका चेहरा फाड़ कर बाहर फूट पड़ेगा!

अब जब जलते हुए बदनों की दुर्गन्ध महलों तक पहुंची तब आए हो। कोई फायदा नहीं तुम्हारे आने का! जाओ, चले जाओ। मैं कहता हूं चले जाओ! खों..खों खों... हुभभ!

भोकाल दौड़ा उसकी ओर –

यह... यह भी गया। लेकिन जाते-जाते मुझे अपराधी बना गया!

इसमें तुम्हारी क्या गलती है भोकाल?

बोलते-बोलते खांसी का तेज दौरा पड़ा उसे और वह खामोश हो गया!

गलती है तुरीन! चुड़ैलों के गायब हो जाने के बाद हमें इतना निश्चिंत नहीं हो जाना चाहिए था!

अब हमें क्या करना चाहिये?

अब हम तिलिस्मा नहीं जा सकते!

क्यों?

क्योंकि नगर के और हिस्सों में जारी होगा अब उनका हत्याकाण्ड जिसे रोकना हमारा पहला कार्य होना चाहिए!

तुम ठीक कह रहे हो महाबली!

चुड़ैलों की तलाश में भोकाल ने रथ दौड़ा दिया।

दुर्गन्ध के मारे मस्तिष्क फटा जा रहा था –

भोकाल! तुम यकायक इतने खामोश क्यों हो गए?

इस वृद्ध की बातों ने मेरी आत्मा तक झंझोड़ दी! तुरीन! मैं खुद को अपराधी महसूस कर रहा हूं!

रथ तीव्र गति से दौड़ा जा रहा था।

भोकाल के हृदय एवं मस्तिष्क का द्वन्द भी तीव्र गति पर था –

उन चुड़ैलों को मौत के घाट उतारने के बाद मैं अपने इस अपराध की सजा भुगतूंगा!

और वह सजा होगी भोकाल की **मौत!**

केवल इतना ही कह सकी थर्राती हुई तुरीन –

क..क्या कह रहे हो भोकाल?

उसके कानों ने जैसे सुनना बन्द कर दिया। आंखों ने झपकना छोड़ दिया। दिल ने धड़कना छोड़ दिया। कुछ नहीं दिख रहा था चारों तरफ सिवाय तारों के।

लेकिन तभी फिजां में गूंजती चीखों ने उनकी बातों का सिलसिला तोड़ दिया। सामने नजर आते इस हौलनाक दृश्य ने उनको झंझोड़ दिया!
यह हुए मेरे दस शतक पूरे!
नहीं, जल मरूंगा! छोड़ दो मुझे!
राजा, महाराजा, सैनिको बचाओ!
मैं भी जल्दी-जल्दी अपने शतक पूरे करूं! यह लगा मेरा अठठा!
ओ ऊपर वाले! हमारी पुकार सुन! इन डायनों को मारने के लिए फरिश्ता भेज!
यह मेरा चौका!
एक के बाद एक बलि दे रही थीं तीनों चुड़ैलें और इसीलिये आज वे अत्यंत प्रसन्न नजर आ रही थीं!

क्रोध से कांपता दहाड़ उठा भोकाल-

बन्द करो ये दरिंदगी!

निर्दोषों की चीखों व चुड़ैलों की हंसी को चीरती हुई उसकी दहाड़ गूंज उठी!

जो जहां थी वहीं रुक गई। पलटकर देखा तीनों ने-

भोकाल!

तुरीन!

फिर आ गए ये!

तीनों के चेहरों पर खेल गई एक दुष्ट मुस्कान!

तीनों इकट्ठी होकर दौड़ पड़ीं भोकाल की ओर-

अब यह दरिंदगी खत्म नहीं होगी!

अब हम तेरी भी बलि देंगी!

तीनों उड़ीं-

भोकाल का नाम मिटा देंगी हम!

हम चुड़ैलों की दुनिया से तेरा आतंक समाप्त हो जाएगा अब!

दबोच लिया उन्होंने भोकाल को-

हमें अब दस हजार बलियां देने से रोकने वाला कोई ना होगा!

कमाल की फुर्ती का प्रदर्शन किया उन्होंने, भोकाल को संभलने का जरा अवसर ना दिया और उसे लेकर उड़ चली आसमान में –
ही-ही-ही! दुष्ट चुड़ैलों से पंगा लिया अब जान से जाएगा!
उफ!
ही-ही-ही! पाजी कहीं का जहां-जहां हम जाती हैं वहीं चला आता है।
क्याऊं
चल कपाला
ही-ही-ही! हम चुड़ैलों के साथ पकड़म-पकड़ाई खेलता है मासपीटा, अब इसके साथ "आग-आग, बचाओ-बचाओ" खेलेंगे!
पहला घूंसा जड़ा उसके बाजला ने –
आह!
इसने पहले मुझे एक भी गाली नहीं देने दी।
दूसरा जड़ दिया उल्लूक ने –
यानी इसने हमारा खेल खराब किया!
धरती की तरफ गिरने लगा वह –

उसे सम्भाला चमजोई ने और एक घूंसे के साथ उसने भी अरमान पूरे कर लिये—
तूने मुझे धरती से आकाश की तरफ उछाला था। मैं तुझे आकाश से धरती तक पहुंचाऊंगी।
भोकाल का शरीर तेजी से धरती पर टकराने के लिये बढ़ा !
कपाला पर सवार तुरीन ने उसे बचाने के लिये हाथ बढ़ाए किन्तु—
हमारे रहते तुम इसकी कोई मदद ना कर सकोगी।
भोकाल का गिरना जारी रहा—
अंततः धरती से टकराया वह—
उफ! अचानक कितना असहाय बना दिया गया हूं मैं।
उआह
बुरी तरह घायल होकर कुछ सोचने समझने की शक्ति कुछ पल के लिये वह गंवा बैठा।
ऐसा ही सब कुछ हुआ तुरीन के साथ। जब तीनों ने उसे कपाला के ऊपर से धकेल दिया
ही-ही-ही! गई नासपीटी मेरे पंख जला दिये थे मरी ने।
अब दोनों ही जांबाज धरती पर असहाय पड़े हुए थे।
चमजोई के भाड़ से खुले मुंह से उड़े छोटे-छोटे सैकड़ों चमगादड़—
फुर्र फुर्र फुर्र...
भोकाल और तुरीन दोनों के जिस्मों से चिपक गए वे चमगादड़—
एक अजीब सी कैद में बंधकर रह गए दोनों !

शीघ्र ही चुड़ैलों ने घेर लिया उन्हें —

ही-ही-ही! मैं इसे मस्तचक्रा से काटूंगी!

मैं तलभाल से भेद दूंगी!

और मैं इन्हें अपने तीरों से छेद दूंगी!

उनके हाथों में उनके हथियार प्रकट हुए और वे उस पर टूट पड़ीं —

बड़ा आया मानवता की रक्षा करने वाला!

मानवता क्या खाकर चुड़ैलियत का सामना करेगी!

अब दम है तो कुछ करके दिखाओ!

पिघले शीशे की तरह उनकी बातें भोकाल के कानों में पड़ रही थीं।

चिंघाड़ उठा वह —

भोकाल

महा प्रलयंकारी परिवर्तन हुआ उसके जिस्म व उसके बाहुबल में।

अपनी तरफ बढ़ते मस्तचक्रा को काट फेंका प्रलयंकारी तलवार ने —

उफ! मेरे मस्तचक्रा!

उलूक! मानवता का खेल खेलने वाले यूं नहीं हारा करते!

फिर घूमा वह चमजोई की तरफ और फुर्ती से किया एक वार—

हाय! मेरी तलभाल!

चुड़ैलियत मानवता को नहीं मार सकती चमजोई!

वह फिर पलटा और अब —

उसने बाजला के तरकश का काम तमाम कर दिया-

अब तेरे तरकश में वह दम नहीं रहा बाजला!

जो कुछ करके दिखा सके।

तीनों को ही निहत्था कर दिया था उसने !

फिर वह तेजी से तुरीन की तरफ पलटा और उसने तलवार उसके जिस्म से चिपटे चमगादड़ों से छुआ दी–

तुरीन! मेरी तलवार की शक्ति ना सह सकेंगे ये चमगादड़! तुम उठने का प्रयास करो!

चमगादड़ों के लिये असह्य हो गई तलवार की शक्ति!

तुरीन ने अपनी सम्पूर्ण शक्ति समेटी और उस बंधन को तोड़कर खड़ी हो गई वह।

उन चुड़ैलों की तरफ बड़ी ही आक्रमक मुद्रा में देखा उसने!

प्रहारा की शक्ति किरणें निकल चलीं-

प्रहारा की शक्ति तुम्हें अभी भस्म कर देगी तिग्मियों!

तीन चुड़ैलों की तिगड़ी भयभीत सी अपनी तरफ बढ़ती मौत को देखती रह गई!

किन्तु जिस सुरक्षा कवच को वे भूल गई थीं उसका आभास होते ही तीनों फिर खिल उठीं–

ही-ही-ही! अब हमारा तुम दोनों कुछ नहीं बिगाड़ सकते, क्योंकि हम तीनों सुरक्षा कवच में सुरक्षित हैं।

अरे! प्रहारा का वार पहली बार असफल हुआ है।

एकाएक आंखों ही आंखों में तीनों ने कुछ इशारा किया –

और बाजला के हाथों में नजर आने लगा महाचुड़ैल का आईना –

ही-ही-ही!

सुबह आईने में शक्ल नहीं देखी होगी! ले अब देख ले, चली है चुड़ैलों का मुकाबला करने!

तुरीन की निगाहें आईने से टकराईं और ...

आघर्र... घर्रर्रर्र
और?
उफ! यह इन डायनों ने तुरीन के साथ क्या किया?
और...!
ही ही ही! अब हम तीन नहीं, अब हम हैं चार चुड़ैल और...

और उसके साथ ही-
...एक राक्षस! ही ही ही! चार चुड़ैल और एक राक्षस!
भोकाल की भी नजरें पड़ ही गईं आइने पर।
प्रिय पाठको!
आप लोगों की निरंतर सराहना ही मेरी मार्गदर्शक साबित हुई है। "भोकाल की तलवार" के विषय में आपके जो पत्र मुझे मिले उन्हें पढ़कर दिल को बहुत खुशी हुई कि आप सबको मेरा प्रयास बहुत अच्छा लगा। आपने भोकाल के परीलोक के विषय में लिखने को कहा है। प्रस्तुत चित्रकथा के अगले भाग 'तन्त्रा' के पश्चात "चमत्कारी भोकाल" में मैं उसे उसके 'परीलोक' में ले जा रहा हूं। प्रस्तुत चित्रकथा के जो प्रश्न रह गए हैं, उन्हें तन्त्रा में समाप्त कर दूंगा जो कि शीघ्र ही प्रकाशित होगी।
एक बार फिर आपके सुझावों व सराहनाओं के लिये धन्यवाद।
आपका: संजय गुप्ता, 1603, दरीबा कलां, दिल्ली-6
ही-ही-ही
ही-ही
ही-ही-ही

क्रमशः